अर्पण

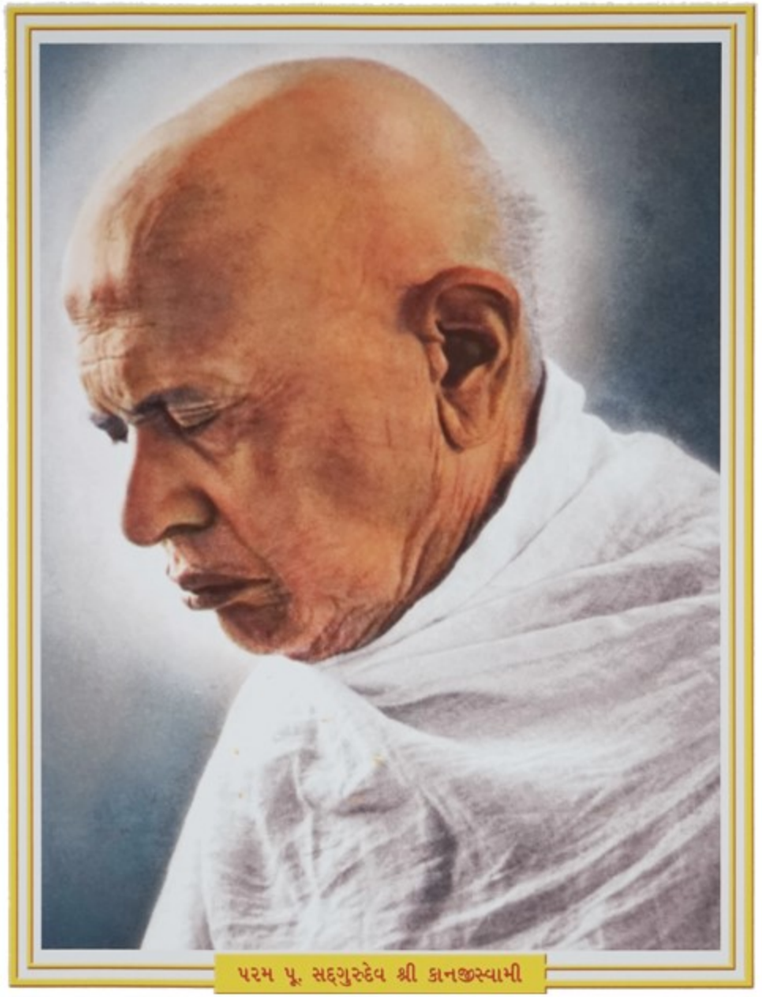

कल्याणमूर्तिश्रीसद्गुरुदेवको
जिन्होंने इस पामर पर अपार उपकार किया है। जो स्वयं
मोक्षमार्ग में विचर रहे हैं और अपनी दिव्य श्रुतधारा
द्वारा भरतभूमि के जीवों को सतत्‌रूप से मोक्षमार्ग
दर्शा रहे हैं जिनकी पवित्र वाणी में मोक्षमार्ग के
मूलरूप कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शन का माहात्म्य
निरन्तर बरस रहा है और जिनकी परम कृपा से
यह ग्रन्थ तैयार हुआ है—ऐसे कल्याणमूर्ति
सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझानेवाले
कल्याणमूर्ति श्री सद्‌गुरुदेव को यह
ग्रन्थ अत्यन्त भक्तिभाव से
अर्पण करता हूँ.....

– दासानुदास रामजी

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ६-८ तुलना

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - अन्तर - सूत्र ७ और ८

सूत्र ८ का विषय	सूत्र ७ का विषय
सत्	निर्देश
संख्या	विधान
क्षेत्र	अधिकरण
स्पर्शन	क्षेत्र [सूत्र ८ का विषय]
काल	स्थिति
अन्तर	-
भाव	भावनिक्षेप [सूत्र ५ का विषय]
अल्पबहुत्व	-

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यग्दर्शन का वर्णन [१]

- सम्यग्दर्शन
  - प्रमाण
    - जीवद्रव्य के श्रद्धा गुण की सम्यक् पर्याय
  - नय
    - द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नय [स्लाईड २०६]
    - निश्चय और व्यवहार नय [स्लाईड २०७]

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यग्दर्शन का वर्णन [१]

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यग्दर्शन का वर्णन [१]

- नय
  - निश्चय नय
    - श्रद्धा गुण की अपेक्षा-- स्वानुभव
  - व्यवहार नय
    - सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा
    - सात तत्त्वों की भेदरूप श्रद्धा
    - स्व-पर की भेदरूप श्रद्धा

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - ६ प्रकार से सम्यग्दर्शन का वर्णन

विषय	विषय-वस्तु
निर्देश	जीवादि सात तत्त्वों की यथार्थ श्रद्धापूर्वक , निज शुद्धात्मा का प्रतिभास विश्वास प्रतीति को निर्देश कहते हैं।
स्वामित्व	चारों गति के संज्ञी पंचेन्द्रिय भव्य जीव स्वामी होते हैं।
साधन	साधन के दो भेद है--अन्तरङ्ग और बाह्य [विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-२०९]
अधिकरण	सम्यग्दर्शन का अन्तरङ्ग आधार आत्मा है और बाह्य आधार त्रसनाली है।
स्थिति	[विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-२१०]
विधान	[विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-२११]

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - सम्यग्दर्शन का साधन

- सम्यग्दर्शन का साधन
  - अन्तरङ्ग कारण
    - स्व शुद्धात्मा के त्रिकाली ज्ञायकभाव का आश्रय है।
  - बाह्य कारण
    - तिर्यञ्च और मनुष्य
      - १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] जिनबिम्ब दर्शन
    - देव-१२वें स्वर्ग से पहले
      - १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] जिनकल्याणक दर्शन , ४] देवऋद्धि
    - देव-१२-१६वें स्वर्गपर्यन्त
      - १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] जिनकल्याणक दर्शन
    - ९ ग्रैवेयक
      - १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण
    - ३रे नरक तक
      - १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] दुःखानुभव
    - ४थें से ७वें नरक तक
      - १] जातिस्मरण , २] दुःखानुभव

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - सम्यग्दर्शन की स्थिति

- सम्यग्दर्शन की स्थिति
  - जघन्य
    - ३ प्रकार के सम्यग्दर्शन की जघन्य से जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है।
  - उत्कृष्ट
    - औपशमिक
      - अन्तर्मुहूर्त
    - क्षायोपशमिक
      - ६६ सागर
    - क्षायिक
      - मोक्ष = सादि-अनन्त
      - संसार = ३३ सागर तथा अन्तर्मुहूर्त सहित ८ वर्ष कम दो कोडी पूर्व

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - सम्यग्दर्शन का विधान

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ८ प्रकार से सम्यग्दर्शन का वर्णन [१]

विषय	विषय-वस्तु
सत्	सम्यग्दर्शन के अस्तित्व को सत् कहते हैं।
संख्या	सम्यग्दर्शन के परिणामों की गणना को संख्या कहते हैं। [४ गति , ३ प्रकार]
क्षेत्र	सम्यग्दृष्टि के वर्तमानकालीन निवास को क्षेत्र कहते हैं। [४ गति , ३ प्रकार की अपेक्षा त्रसनाडी]
स्पर्शन	सम्यग्दृष्टि के त्रिकालवर्ती निवास को स्पर्शन कहते हैं। [४ गति , ३ प्रकार की अपेक्षा तीनलोक]

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - ८ प्रकार से सम्यग्दर्शन का वर्णन [१]

विषय	विषय-वस्तु
काल	सम्यग्दर्शन के स्थिर रहने की मर्यादा को काल कहते हैं। [विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-२१४]
अन्तर	सम्यग्दर्शन के विरह काल को अन्तर कहते हैं। [विशेष चर्चा आगे-स्लाईड-२१५]
भाव	सम्यग्दर्शन - स्व शुद्धात्मा के त्रिकाली ज्ञायकभाव का आश्रय है।
अल्पबहुत्व	अन्य पदार्थ [कर्म] की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन की हीनता-अधिकता के वर्णन को अल्पबहुत्व कहते हैं।

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - सम्यग्दर्शन का काल

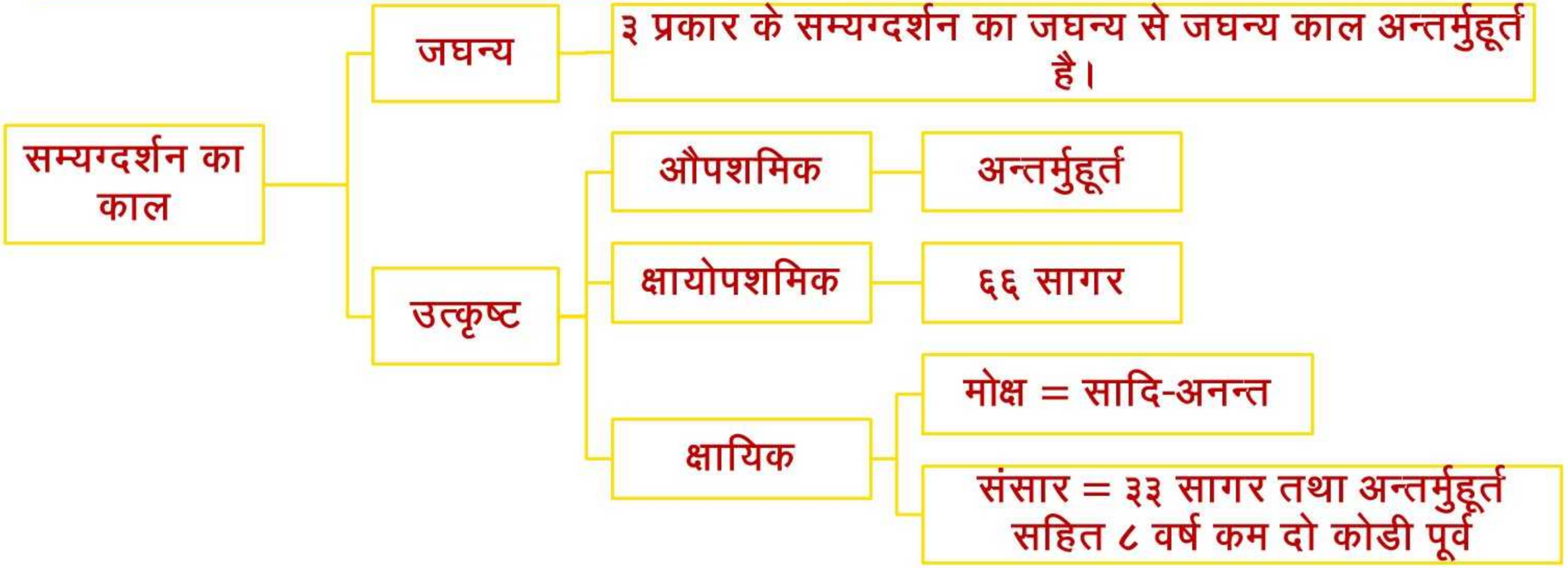

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - सम्यग्दर्शन का अन्तर

क्षायिक सम्यग्दर्शन होने के बाद वह सादि-अनन्त काल रहता है।
उसमें अन्तर नहीं होता।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - जीवद्रव्य का वर्णन [१]

- जीवद्रव्य
  - प्रमाण
    - ज्ञानादि अनंत गुण-पर्यायमय जीवद्रव्य
  - नय
    - द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नय [स्लाईड २१७]
    - निश्चय और व्यवहार नय [स्लाईड २१८]

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - जीवद्रव्य का वर्णन [१]

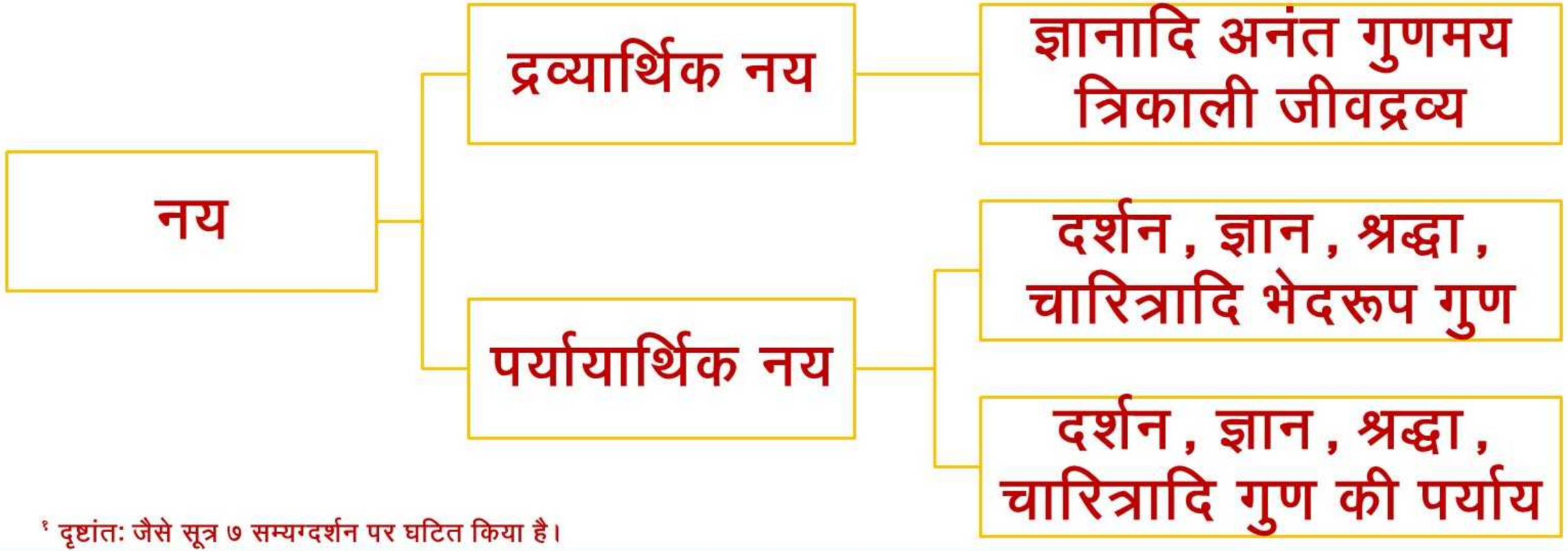

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - जीवद्रव्य का वर्णन [१]

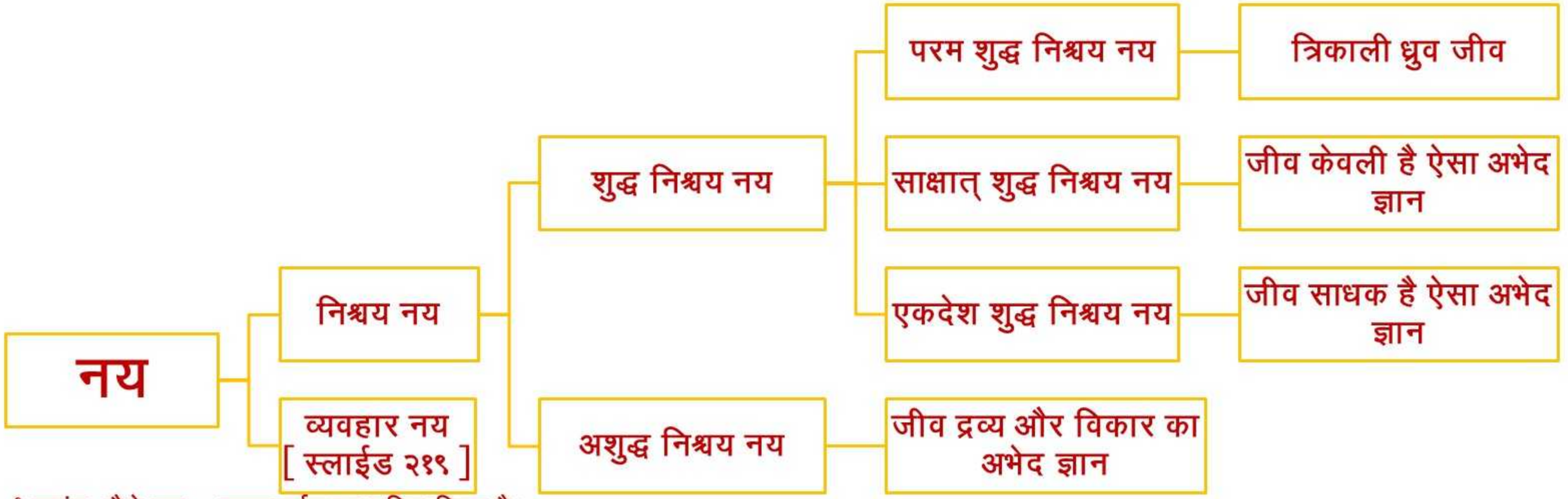

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - जीवद्रव्य का वर्णन [१]

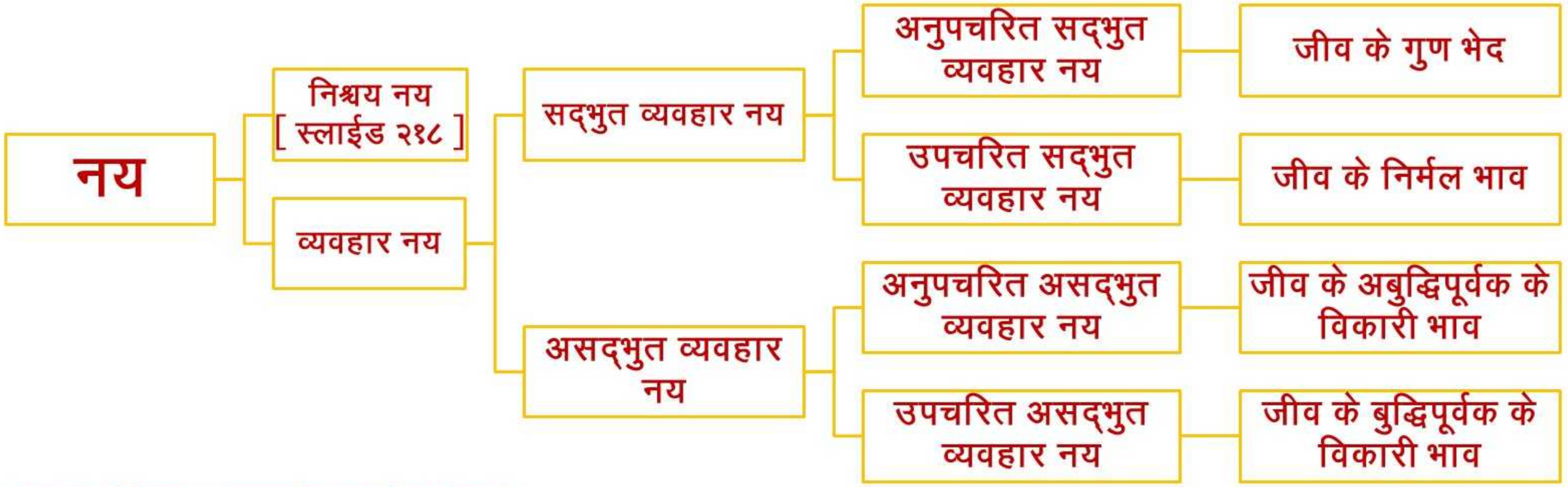

[१] दृष्टांत: जैसे सूत्र ७ सम्यग्दर्शन पर घटित किया है।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - ६ प्रकार से जीव तत्त्व का वर्णन [१]

विषय	विषय-वस्तु
निर्देश	१. पर्यायार्थिक नय -- औपशमिक आदि भावों। २. द्रव्यार्थिक नय – शाश्वत जीवत्व संपन्न जीव। ३. प्रमाण – मुख्य-गौण किए बिना दोनों नयों के विषय को एक साथ ग्रहण करना।
स्वामित्व	जीव स्वयं के परिणामों का स्वामी जीव स्वयं ही है। अतः जीव का स्वामी जीव ही है।
साधन	१. जीवत्व आदि पारिणामिक भावरूपी साधन द्वारा निज स्वभाव में सदाकाल जीव की प्राप्ति होना, वह जीव का निश्चय साधन है। २. व्यवहार से औपशमिक आदि भाव जीव का साधन है, परंतु वे जीव के ही परिणाम होने से जीव ही साधन है। ३. देव-शास्त्र-गुरु, शरीरादि असद्भुत व्यवहार नय से जीव के साधन है।

[१] दृष्टांत: पं. चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ७।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - ६ प्रकार से जीव तत्त्व का वर्णन [१]

विषय	विषय-वस्तु
अधिकरण	१. निश्चय नय से जीव के असंख्यात प्रदेश ही जीव का आधार होने से जीव का अधिकरण जीव ही है। २. व्यवहार नय से नाम कर्म के उदय में प्राप्त पुदगलमय शरीर की रचना जीव का आधार होने से जीव का अधिकरण शरीर ही है।
स्थिति	१. द्रव्य: जीव द्रव्य तीन काल में अपने चैतन्य स्वभावयुक्त ज्ञान-दर्शन उपयोगमय असंख्यात प्रदेश से च्युत नहीं होता है। अत: निश्चयरूप द्रव्यार्थिक नय से जीव की स्थिति अनादि अनंत है। २. पर्याय: व्यवहाररूप पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से श्वास के अठारवें भाग से ३३ सागर पर्यंत अनेक भेदरूप जीव की स्थिति है।
विधान	१. निश्चय नय से जीव एक प्रकार का है, उसमें भेद नहीं है। २. व्यवहार नय से जीव के भेद से २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १९, ५७, ९८, ४०६ विधान है। इसका विस्तार गोम्मटसार जीवकांड में है।

[१] दृष्टांत: पं. चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ७।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - जीव की २० प्ररूपणाएँ [१]

- गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, उपयोग

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - जीव के भेद [१]

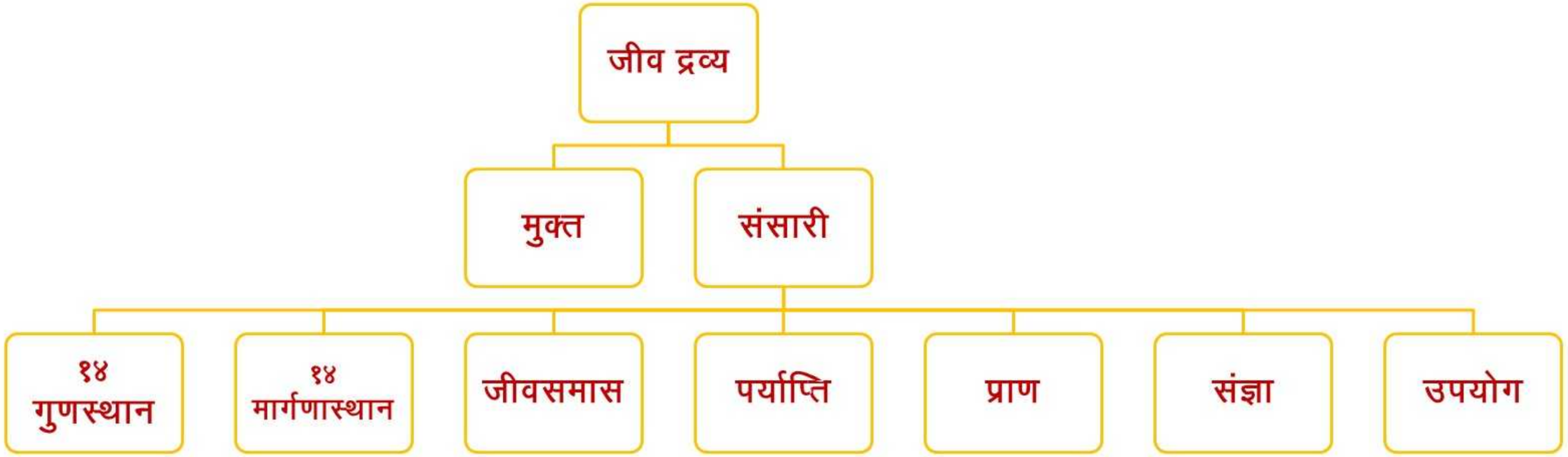

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - जीव के भेद [१]

- जीवसमास , पर्याप्ति , प्राण , संज्ञा और उपयोग -- यह पाँच प्ररूपणाएँ १४ मार्गणा में गर्भित हो जाती है।
- अत: संग्रह नय की अपेक्षा से दो ही प्ररूपणाएँ है -- गुणस्थान और मार्गणास्थान

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद , अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - १४ गुणस्थान [१]

- मिथ्यात्व , सासादन सम्यक्त्व , सम्यग्मिथ्यात्व , असंयत सम्यग्दृष्टि , देशविरत , प्रमत्त-संयत , अप्रमत्त-संयत , अपूर्व-करण , अनिवृत्ति-करण , सूक्ष्म-साम्पराय , उपशांत-मोह , क्षीण-मोह , सयोग-केवली और अयोग-केवली

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद , अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - १४ मार्गणास्थान [१]

मार्गणा	भेद	प्रकार
गति	४	नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव
इन्द्रिय	५	एक, दो, तीन, चार, पाँच
काय	६	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, त्रस
योग	१५	४ मनोयोग, ४ वचनयोग, ७ काययोग
वेद	३	पुरुष, स्त्री, नपुंसक
कषाय	२५	१६ कषाय और ९ नोकषाय
ज्ञान	८	५ सम्यग्ज्ञान और ३ मिथ्याज्ञान

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - १४ मार्गणास्थान [१]

मार्गणा	भेद	प्रकार
संयम	७	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्म-साम्पराय, यथाख्यात, संयमासंयम, असंयम
दर्शन	४	चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल
लेश्या	६	कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यत्व	२	भव्य और अभव्य
सम्यक्त्व	६	मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, औपशमिक, क्षयोपशमिक, क्षायिक
संज्ञी	२	संज्ञी और असंज्ञी
आहारक	२	आहारक और अनाहारक

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - सत् अनुयोग का वर्णन [१]

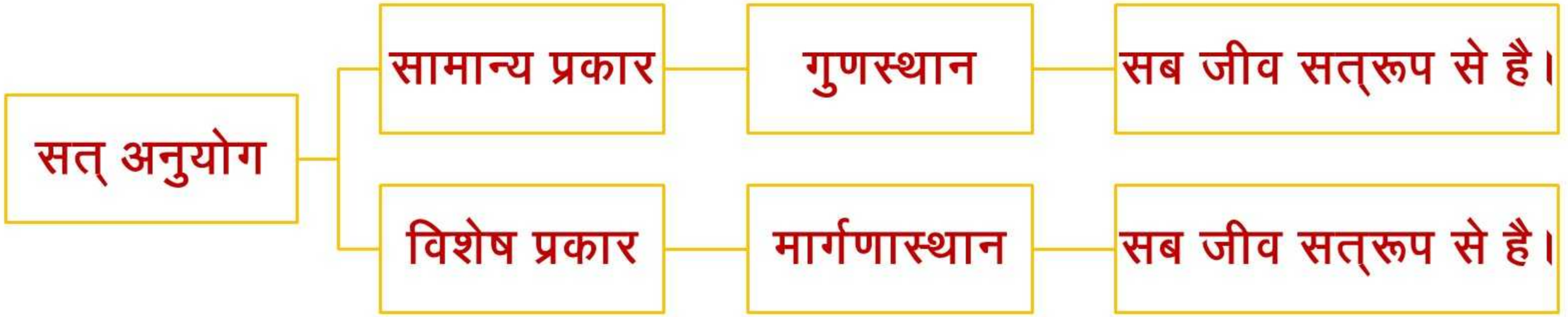

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - संख्या अनुयोग का वर्णन [१]

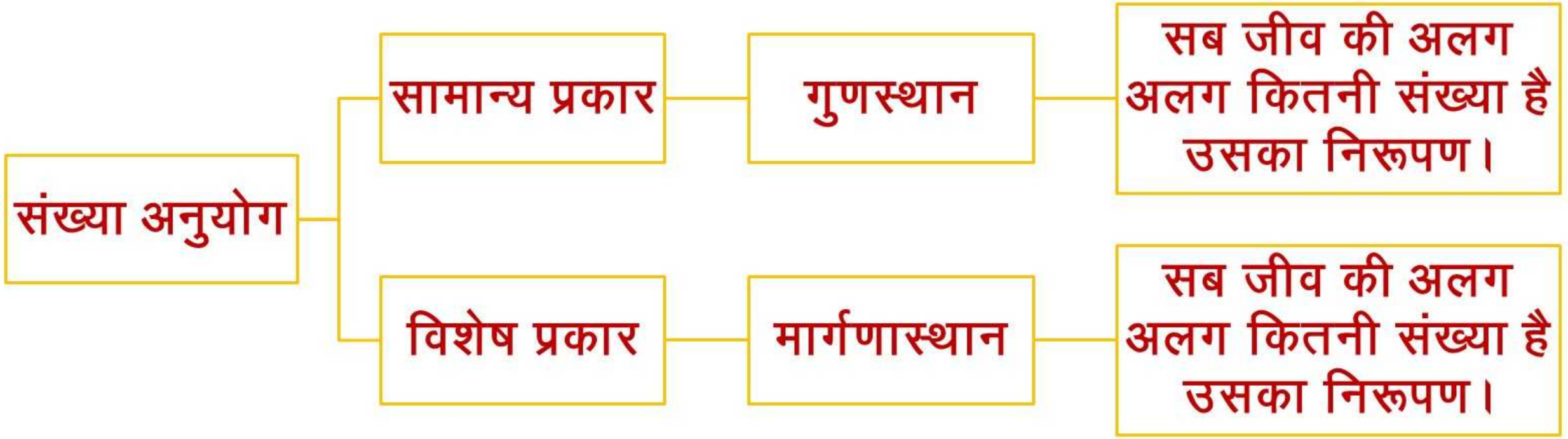

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - क्षेत्र अनुयोग का वर्णन [१]

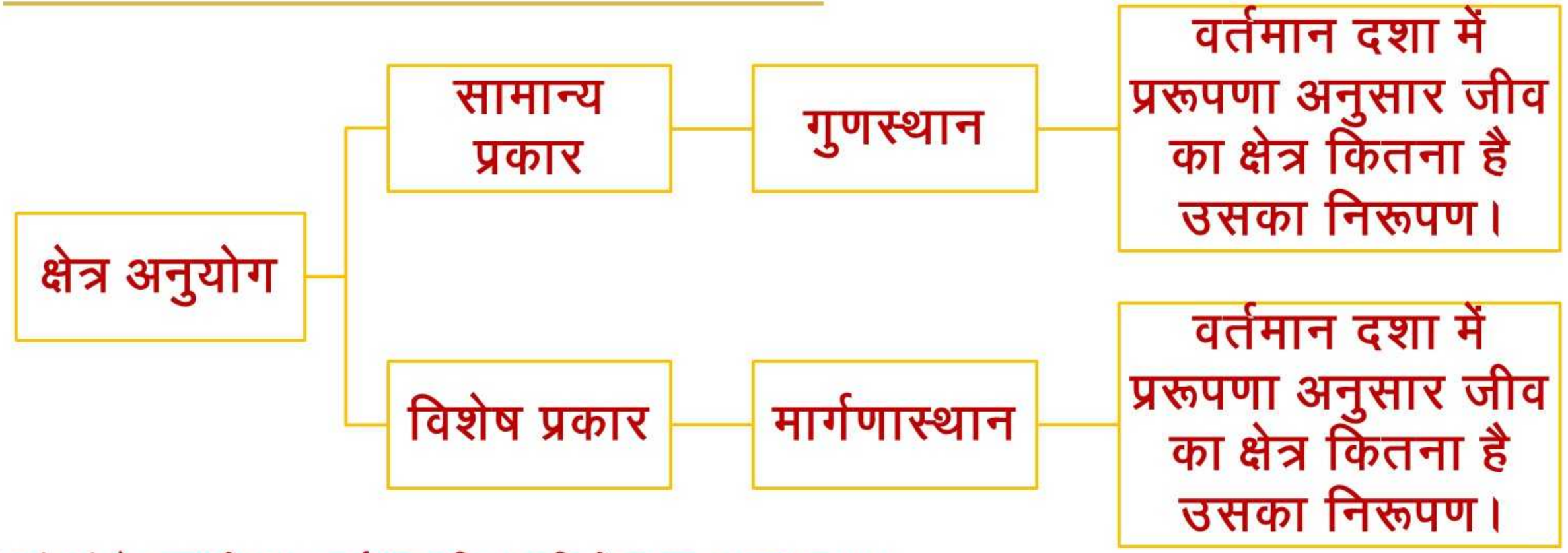

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - स्पर्शन अनुयोग का वर्णन [१]

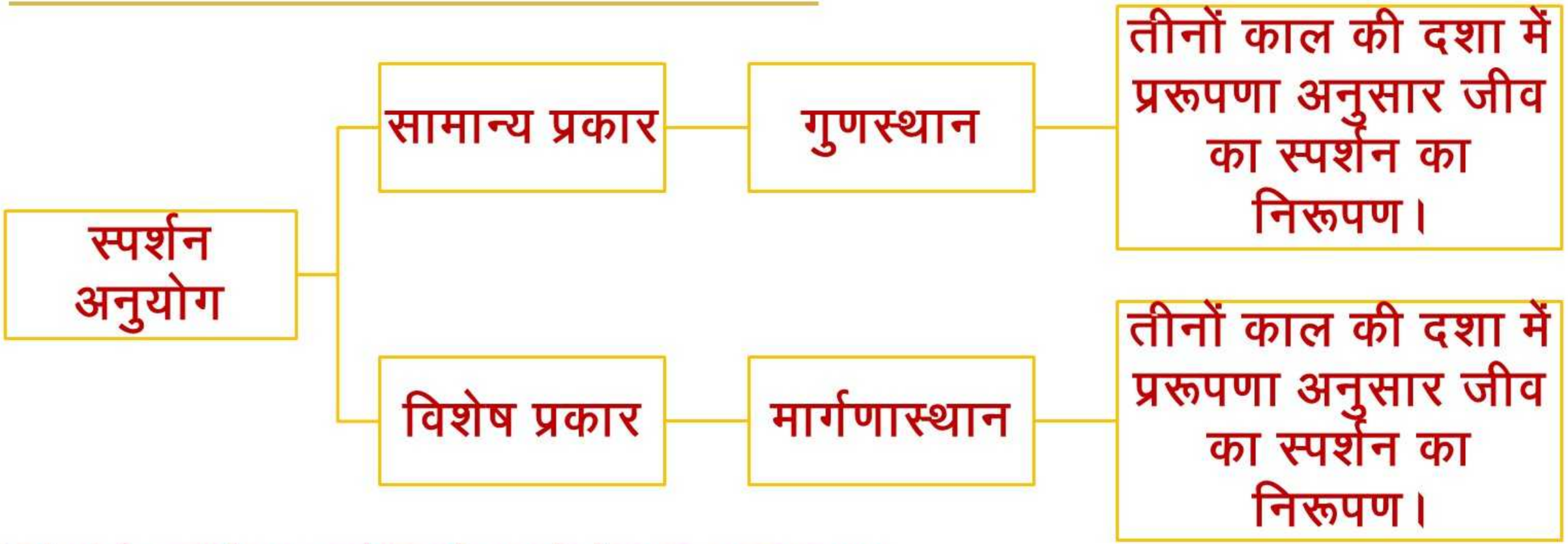

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - काल अनुयोग का वर्णन [१]

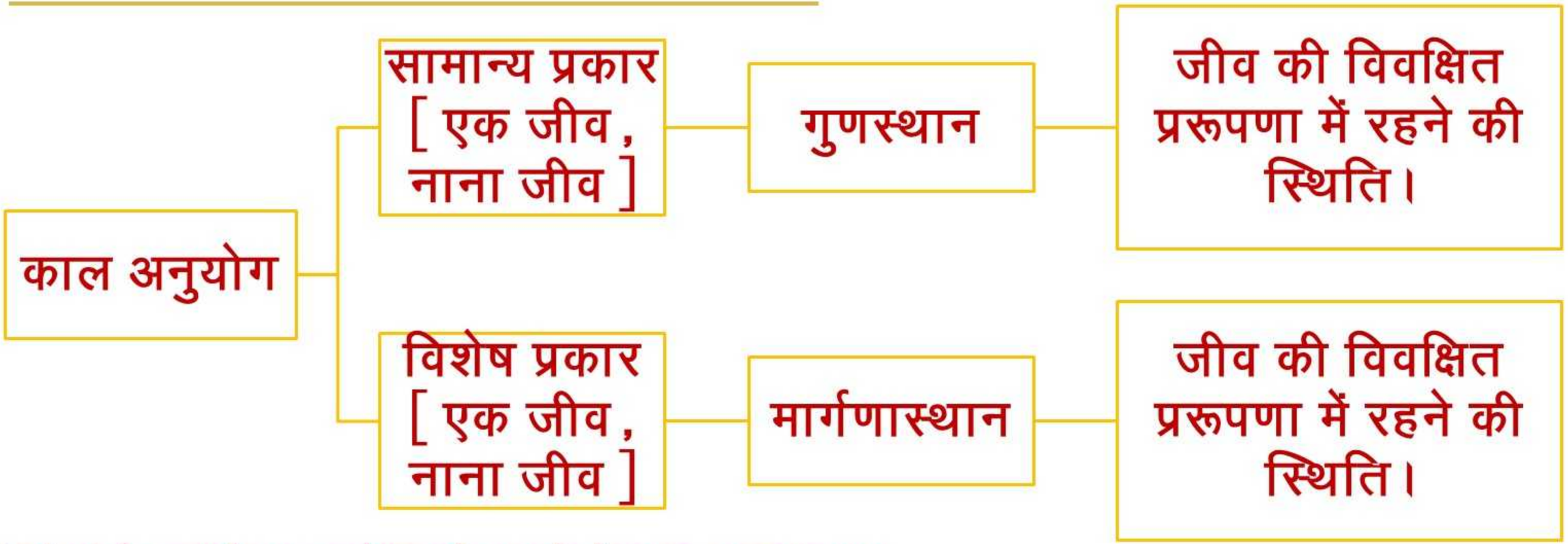

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - अंतर अनुयोग का वर्णन [१]

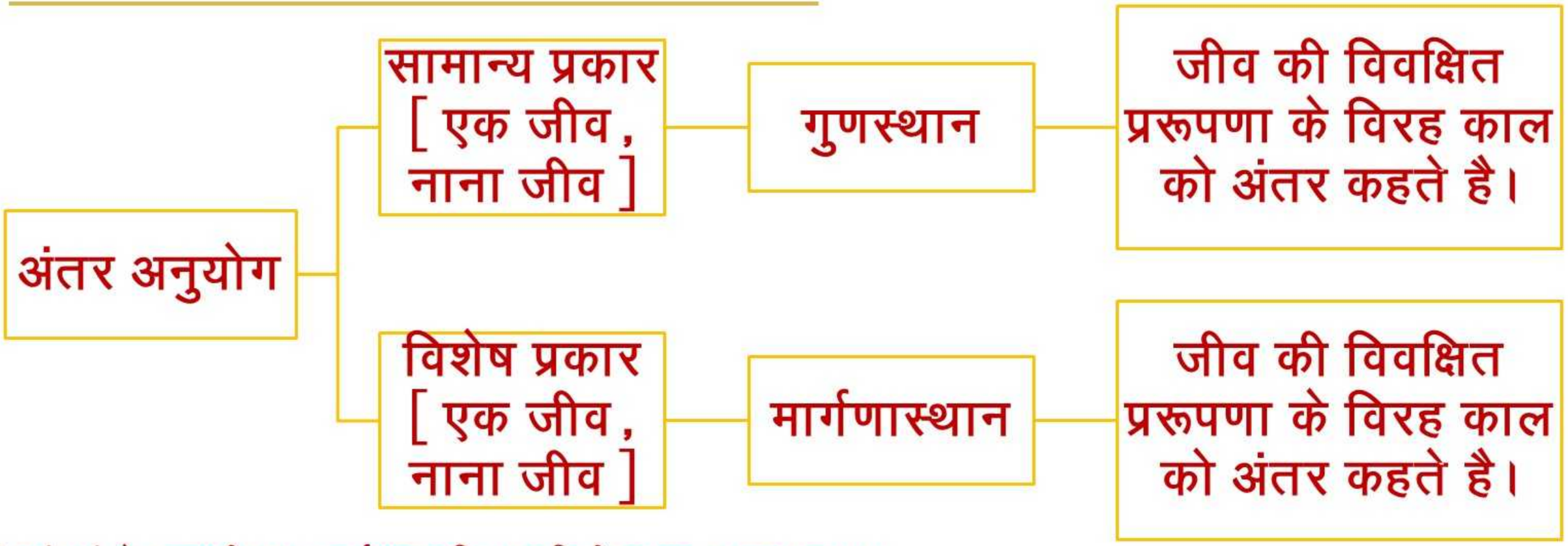

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - भाव अनुयोग का वर्णन [१]

- औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक; यह पाँच भेदरूप परिणामों को भाव कहते है।

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

अध्याय १: सूत्र ६-८ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के मुख्य-अमुख्य उपाय की तुलना

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। - अल्प-बहुत्व अनुयोग का वर्णन [१]

- अल्प-कम, बहुत्व-अधिकपना; भावों का परस्पर कम-अधिकरूप होना वह अल्प-बहुत्व है।

[१] दृष्टांत: पं॰ चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र ८।

सहर्ष आभार

मोक्षशास्त्र की पाठशाला के प्रेरणास्तोत्र एवं सहयोगी

- वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु, पू॰ गुरुदेवश्री आदि ज्ञानी धर्मात्मा
- आदरणीय समस्त सहयोगी विद्वानगण
- श्री सीमन्धरस्वामी दि॰ जिनमंदिर, विले पार्ला के समस्त ट्रस्टीगण एवं मुमुक्षुगण
- श्री दि॰ जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़
- श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
- **www.vitragvani.com**
- **www.atmadharma.com**
- भारतीय ज्ञान पीठ